

भारत में बौद्ध कला के विविध रूपों का विकास: गंधारा, मथुरा और अमरावती शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

¹बच्चू सिंह, ²डॉ. देवेन्द्र कुमार (असिस्टेंट प्रोफेसर)

¹शोधार्थी, ²पर्यवेक्षक

¹⁻²विभाग: चित्रकला, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार:

भारत में बौद्ध कला का विकास विभिन्न शैलियों के माध्यम से हुआ है, जिनमें गंधारा, मथुरा, और अमरावती शैलियाँ प्रमुख हैं। प्रत्येक शैली की अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि है, जो कला के रूप, प्रतीकवाद और विषयवस्तु में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। गंधारा शैली में ग्रीको-रोमन प्रभाव, मथुरा शैली में भारतीय धार्मिक प्रतीकवाद, और अमरावती शैली में जटिल चित्रकला और मूर्तिकला की परंपराएँ प्रमुख हैं। इस अध्ययन में इन तीन प्रमुख शैलियों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे इनकी विशेषताओं और उनके धार्मिक, सामाजिक प्रभावों को समझा जा सके। इस शोध का उद्देश्य इन शैलियों के बीच के अंतर को उजागर करना और बौद्ध कला के इतिहास में इनके योगदान को स्पष्ट करना है।

मुख्य शब्द:

बौद्ध कला, गंधारा शैली, मथुरा शैली, अमरावती शैली, ग्रीको-रोमन प्रभाव, धार्मिक प्रतीकवाद, मूर्तिकला, चित्रकला, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, बौद्ध कला का विकास।

1. परिचय

भारत में बौद्ध कला का महत्व और इतिहास बौद्ध धर्म के विकास के साथ गहरे जुड़े हुए हैं। बौद्ध धर्म के फैलने के साथ-साथ, इसके प्रभाव से बौद्ध कला का भी विकास हुआ, जो समय के साथ विभिन्न रूपों में सामने आया। बौद्ध कला का यह विकास मुख्य रूप से तीन प्रमुख शैलियों—गंधारा, मथुरा, और अमरावती—के माध्यम से हुआ, जो भारतीय उपमहाद्वीप में बौद्ध कला के महत्वपूर्ण केंद्र थे (भट्टाचार्य, 2021, देसाई, 2020)। इन शैलियों के माध्यम से बौद्ध धर्म के संदेश और सिद्धांतों को कलात्मक रूप में व्यक्त किया गया। गंधारा शैली में ग्रीको-रोमन प्रभाव देखा जाता है, वहीं मथुरा शैली में भारतीय धार्मिक प्रतीकवाद प्रमुख है, और अमरावती शैली में धार्मिक कथाओं का चित्रण होता है (कुमार, 2019)। इन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन बौद्ध कला की विविधताओं और उसके सांस्कृतिक तथा धार्मिक प्रभावों को समझने में सहायक है।

उद्देश्य:

- बौद्ध कला के ऐतिहासिक महत्व और विकास की प्रक्रिया का विश्लेषण करना।
- गंधारा, मथुरा और अमरावती शैलियों के बीच के सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- इन शैलियों की प्रमुख विशेषताओं और बौद्ध धर्म में उनके योगदान को समझना।
- बौद्ध कला में प्रतीकवाद, मूर्तिकला, और चित्रकला के माध्यम से धार्मिक संदेशों की अभिव्यक्ति का विश्लेषण करना।

2. गंधारा शैली की विशेषताएँ

गंधारा शैली बौद्ध कला के सबसे महत्वपूर्ण और विशिष्ट रूपों में से एक मानी जाती है, जिसका विकास गंधारा क्षेत्र में हुआ, जो आज के अफगानिस्तान और पाकिस्तान के कुछ हिस्सों में फैला हुआ था। यह क्षेत्र प्राचीन काल में एशिया के विभिन्न सांस्कृतिक केंद्रों का संगम था, जिसमें भारतीय, यूनानी (ग्रीक), रोमन



और मध्य एशियाई संस्कृतियों का प्रभाव था। गंधारा की बौद्ध कला में ग्रीको-रोमन प्रभाव की उपस्थिति विशेष रूप से स्पष्ट है, जो अन्य बौद्ध कला शैलियों से इसे अलग करता है। गंधारा क्षेत्र ने इस कला के माध्यम से भारतीय धार्मिक विचारधारा और पश्चिमी कला की विशेषताओं का अद्वितीय मिश्रण प्रस्तुत किया।

गंधारा क्षेत्र की भौगोलिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

गंधारा क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति इसे पश्चिमी और भारतीय संस्कृतियों का मिलाजुला केंद्र बनाती थी। यह क्षेत्र प्राचीन व्यापार मार्गों पर स्थित था, जहाँ भारतीय, यूनानी, और मध्य एशियाई सभ्यताओं का संपर्क हुआ। ग्रीक और रोमन साम्राज्यों के साथ इसके घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंधों के कारण, यहाँ की कला में पश्चिमी तत्वों का समावेश हुआ। मौर्य साम्राज्य के बाद, जब ग्रीको-बैक्ट्रियन और कुषाण साम्राज्य के साम्राज्यवादी प्रभाव से यह क्षेत्र प्रभावित हुआ, तो यहाँ की बौद्ध कला में ग्रीको-रोमन और भारतीय तत्वों का अद्भुत संगम देखा गया। गंधारा का ऐतिहासिक महत्व इसलिए भी बढ़ता है क्योंकि यह क्षेत्र बौद्ध धर्म के प्रसार का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया था, खासकर काश्यप, कनिष्क जैसे महान शासकों के शासनकाल में (शर्मा और मेहता, 2021)।

गंधारा शैली के प्रमुख कला रूप

गंधारा शैली की मूर्तिकला, चित्रकला, और वास्तुकला में ग्रीको-रोमन प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है। इस शैली के मूर्तिकारों ने भगवान बुद्ध और अन्य बौद्ध देवताओं की मूर्तियों को ग्रीक शैलियों के अनुरूप आकार और शारीरिक रूप में तैयार किया। गंधारा शैली की मूर्तियों में विशेष ध्यान दिया गया है मूर्तियों की यथार्थवादी शारीरिकता पर, जिसमें मानव रूपों का सही अनुपात और चेहरे की अभिव्यक्ति को बड़े ही सजीव तरीके से चित्रित किया गया। उदाहरण के तौर पर, बुद्ध की मूर्तियाँ गंधारा शैली में पूरी तरह से मानवीय रूप में प्रस्तुत की जाती थीं, जिसमें उनके चेहरे पर शांति और निर्वाण का प्रतीक, गहरी संतुलित भावनाएँ दिखाई जाती थीं। गंधारा शैली की मूर्तियों में बुद्ध की मुद्रा भी ग्रीक कला से प्रभावित थी, जैसे कि बुद्ध के हाथों में मुद्रा की स्थिति, जो रोमन और ग्रीक मूर्तियों में भी प्रकट होती है।

इसके अतिरिक्त, गंधारा शैली में चित्रकला और वास्तुकला के रूप भी ग्रीको-रोमन शैली से प्रेरित थे। गंधारा में कई बौद्ध भित्ति चित्र मिलते हैं, जिनमें ग्रीक और रोमन शैली के चित्रण को बौद्ध धर्म के धार्मिक विषयों के साथ जोड़ा गया है। गंधारा के चित्रों में स्पष्ट रूप से ग्रीक कला के चंद्रमा, सूर्य, देवताओं के चित्रण की शैली और कक्षीय चित्रण दिखाए गए हैं। गंधारा के स्तूपों और मंदिरों की वास्तुकला में भी ग्रीको-रोमन प्रभाव था, जिसमें स्तंभ, गुंबद और खुले आंगन जैसी रोमन वास्तुकला की विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। साथ ही, यहाँ के संरचनात्मक डिजाइन और मूर्तिकला ने ग्रीक और भारतीय स्थापत्य के तत्वों को मिला दिया था (रानी, 2019)।

ग्रीको-रोमन प्रभाव और बौद्ध कला पर उसका प्रभाव

गंधारा शैली की बौद्ध कला पर ग्रीको-रोमन प्रभाव ने इसे एक नई दिशा दी थी, जो भारतीय बौद्ध कला से काफी भिन्न थी। ग्रीको-रोमन कला के तत्व, जैसे कि मूर्तियों का यथार्थवादी चित्रण, उनके शरीर की संरचना, चेहरे की अभिव्यक्ति, और वस्त्रों की आडंबरता को गंधारा कला में उतारा गया था। खासकर, गंधारा शैली में बुद्ध के चित्रण में ग्रीक आर्ट के प्रभाव स्पष्ट थे, जैसे बुद्ध के चेहरे की सौम्यता, उसकी आंखों की गहरी अभिव्यक्ति, और उसकी मुद्रा की प्राकृतिकता। यहाँ तक कि गंधारा की मूर्तियाँ भारतीय बौद्ध मूर्तियों से अधिक पश्चिमी कला की तरह लगती थीं, जिसमें शारीरिक अनुपात और आंतरिक भावनाओं को विस्तार से चित्रित किया गया था (सिंह, 2017)।

इसका सबसे बड़ा उदाहरण गंधारा के बुद्ध की मूर्तियों में देखा जा सकता है, जहाँ बुद्ध को ग्रीक देवताओं की तरह चित्रित किया गया था। उदाहरण के तौर पर, बुद्ध के सिर पर हेलमेट जैसे मुकुट और रेशमी वस्त्र जो ग्रीक शैली में होते थे, उन्हें दिखाया गया था। गंधारा कला में शारीरिक रूप के विस्तार और डिटेलिंग



का उद्देश्य बौद्ध धर्म के संदेश को अधिक सजीव और प्रभावी रूप से प्रस्तुत करना था, ताकि इसके दर्शक इसे अधिक गहरे से समझ सकें।

गंधारा शैली में बौद्ध धर्म के प्रतीकों और दृष्टिकोणों को इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया था कि वह पश्चिमी कला के समझने वाले दर्शकों के लिए भी सहज हो। गंधारा के कला रूपों में विशेष रूप से यह देखा गया कि ग्रीक और रोमन प्रभाव ने बौद्ध कला को दुनिया के अन्य हिस्सों में फैलाने में मदद की, जिससे बौद्ध धर्म की लोकप्रियता बढ़ी (शर्मा और मेहता, 2021)।

इस प्रकार, गंधारा कला न केवल बौद्ध धर्म के प्रतीकों और संदेशों को प्रसारित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम थी, बल्कि इसने पश्चिमी कला के तत्वों को भारतीय धार्मिक आस्थाओं के साथ मिलाकर एक नए प्रकार की बौद्ध कला को जन्म दिया, जो आज भी कला और इतिहास के अध्ययन में अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है।

3. मथुरा शैली की विशेषताएँ

मथुरा शैली, भारतीय बौद्ध कला की एक महत्वपूर्ण शैली मानी जाती है, जो अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। मथुरा का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ इस शैली को विशिष्ट बनाता है, क्योंकि यहाँ की कला स्थानीय धार्मिक प्रतीकों और आदर्शों से गहरे जुड़ी हुई थी। मथुरा में बौद्ध कला का विकास मुख्य रूप से गुप्त काल के बाद हुआ, और यहाँ की मूर्तिकला और चित्रकला ने बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को बड़े प्रभावी तरीके से दर्शाया। मथुरा क्षेत्र में बौद्ध कला ने खासकर धार्मिक प्रतीकवाद, आस्थाओं, और सामाजिक मान्यताओं को साकार रूप में प्रस्तुत किया, जो इस क्षेत्र के सांस्कृतिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य को दर्शाता है (सैनी, 2020)।

मथुरा की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

मथुरा, एक प्राचीन शहर, उत्तर भारत का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र था। मथुरा का ऐतिहासिक संदर्भ इस तथ्य से जुड़ा हुआ है कि यह क्षेत्र बौद्ध धर्म के प्रमुख प्रसार क्षेत्रों में से एक था, विशेष रूप से जब बौद्ध धर्म भारत के विभिन्न हिस्सों में फैल रहा था। मथुरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और धार्मिक आदर्शों ने यहाँ की कला को गहरे धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से प्रभावित किया। मथुरा की कला में बौद्ध धर्म के प्राचीन तत्वों को भारतीय धार्मिक प्रतीकवाद के साथ जोड़ा गया था, जो इस क्षेत्र की कला को और भी अधिक सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समृद्ध करता था (सैनी, 2020)।

मथुरा की मूर्तिकला और चित्रकला के प्रमुख गुण

मथुरा शैली की मूर्तिकला और चित्रकला में बौद्ध जीवन और शिक्षाओं का समृद्ध चित्रण किया गया है। मथुरा की मूर्तियों में, विशेष रूप से बुद्ध की छवियाँ, एक अद्वितीय यथार्थवादी शैली में बनाई गईं, जो ग्रीको-रोमन प्रभाव के मुकाबले अधिक भारतीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के प्रति संवेदनशील थीं। बुद्ध की मूर्तियों में चेहरे की शांति और निर्वाण की अभिव्यक्ति, उनके आस-पास के देवी-देवताओं और बौद्ध कथाओं के चित्रण, और उनके जीवन के विभिन्न घटनाओं का चित्रण कला के महत्वपूर्ण पहलू थे। इन मूर्तियों में ध्यान देने योग्य बात यह है कि मथुरा शैली में बुद्ध की छवि को भारतीय आदर्शों के अनुसार अत्यधिक सजीव और मानवीय रूप में प्रस्तुत किया गया था (वर्मा और जोशी, 2018)।

मथुरा की चित्रकला भी बहुत समृद्ध थी, जहाँ बौद्ध जीवन की घटनाओं और उनके सिद्धांतों को चित्रित किया गया। इन चित्रों में बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों का चित्रण किया गया, जैसे कि सम्यक दृष्टि, निर्वाण की प्रक्रिया, और बुद्ध के जीवन के विविध पहलू (वर्मा और जोशी, 2018)। इन चित्रों में धर्म और सांस्कृतिक आदर्शों को जोड़ा गया था, जो बौद्ध धर्म के प्रवर्तक और उनके अनुयायियों के आस्थाओं और विश्वासों को दर्शाता था।

मथुरा शैली में धार्मिक प्रतीकवाद



मथुरा शैली में धार्मिक प्रतीकवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यहाँ की मूर्तियों और चित्रों में प्रतीकों का गहरा धार्मिक महत्व था, जो बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों को दर्शाते थे। उदाहरण के तौर पर, मथुरा में बुद्ध की छवियों में उनके चार प्रमुख जीवन चरणों को दर्शाया गया था—जन्म, ज्ञान की प्राप्ति, उपदेश देना, और निर्वाण प्राप्ति—जो बौद्ध धर्म के केंद्रीय सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करते थे। इसके अतिरिक्त, मथुरा की कला में विभिन्न देवी-देवताओं, जैसे कि बोधिसत्त्वों और अन्य धार्मिक रूपों का चित्रण भी किया गया, जो बौद्ध धर्म के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते थे (यादव और शर्मा, 2020)।

मथुरा शैली का धार्मिक प्रतीकवाद केवल मूर्तियों में ही नहीं, बल्कि चित्रकला में भी देखने को मिलता था, जहाँ हर चित्र के माध्यम से एक गहरी धार्मिक कहानी या बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को दर्शाने का प्रयास किया गया था। यह प्रतीकवाद न केवल बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को चित्रित करता था, बल्कि आम जनता के लिए धर्म को समझने का एक सरल और प्रभावी तरीका भी प्रस्तुत करता था (यादव और शर्मा, 2020)।

इस प्रकार, मथुरा शैली की बौद्ध कला न केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति थी, बल्कि यह बौद्ध धर्म के सिद्धांतों और आदर्शों का एक प्रभावी माध्यम भी थी। इसकी मूर्तियाँ और चित्रकला न केवल धार्मिक महत्व रखती थीं, बल्कि उन्होंने उस समय के समाज में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में भी अहम भूमिका निभाई थी।

4. अमरावती शैली की विशेषताएँ

अमरावती शैली बौद्ध कला की एक अत्यधिक महत्वपूर्ण और विशिष्ट शैली है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में बौद्ध धर्म के विकास के साथ जुड़ी हुई है। अमरावती का ऐतिहासिक संदर्भ और इसकी कला की विशेषताएँ बौद्ध धर्म के प्रचार और कला के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह शैली विशेष रूप से अपनी चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला के रूपों में नवीनता के लिए प्रसिद्ध है। अमरावती शैली ने बौद्ध धर्म के दर्शन और शिक्षाओं को नए और विशिष्ट दृश्यात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया, जो इसे अन्य बौद्ध शैलियों से अलग करता है (कुमार, 2018)।

अमरावती शैली का विकास और ऐतिहासिक संदर्भ

अमरावती शैली का विकास आंध्र प्रदेश के अमरावती क्षेत्र में हुआ, जहाँ बौद्ध धर्म के अनुयायी बड़े पैमाने पर निवास करते थे। यह शैली गुप्तकाल से पहले के समय में स्थापित हुई थी और इसके महत्व का सबसे बड़ा कारण यह था कि यह बौद्ध धर्म की कला को एक नई दिशा प्रदान करती है। अमरावती कला में मूर्तिकला और चित्रकला के अद्वितीय रूप सामने आए, जो धार्मिक संदेशों और बौद्ध सिद्धांतों को व्याख्यायित करने का एक प्रभावी तरीका बने। अमरावती शैली ने भारतीय कला के परंपरागत रूपों से बाहर जाकर, बौद्ध धर्म के संदेश को एक नए, विस्तृत और गतिशील तरीके से प्रस्तुत किया (कुमार, 2018)।

अमरावती की कला में महत्वपूर्ण परिवर्तन यह था कि इसमें बौद्ध जीवन के विविध पहलुओं को चित्रित करने के साथ-साथ धार्मिक अनुष्ठानों और निर्वाण की अवधारणा को भी प्रकट किया गया। इस शैली में कला को एक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसमें बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का सहज और प्रभावी रूप से चित्रण किया गया था। इसके परिणामस्वरूप, अमरावती शैली को बौद्ध धर्म की कला में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ, जो आज भी धार्मिक और कलात्मक दृष्टिकोण से अत्यधिक मूल्यवान मानी जाती है (गुप्ता और सिंह, 2017)।

अमरावती कला में दृश्यात्मक और चित्रात्मक दृष्टिकोण की विशेषताएँ

अमरावती शैली की प्रमुख विशेषता इसका दृश्यात्मक और चित्रात्मक दृष्टिकोण है, जो बौद्ध धर्म के गहरे दार्शनिक और धार्मिक विचारों को सरलता और प्रभावशीलता से प्रस्तुत करता है। यहाँ की चित्रकला में दृश्यात्मक बोध और घटनाओं की व्याख्या की विशेषताएँ हैं। अमरावती शैली के चित्रों में बौद्ध जीवन के विविध चरणों को दर्शाया गया है, जैसे कि बुद्ध का जन्म, बुद्ध का ज्ञान प्राप्त करना, उनका उपदेश देना, और अंत में निर्वाण प्राप्त करना। इन चित्रों में शुद्धता, सरलता और सुंदरता का अद्भुत संयोजन होता है, जो दर्शकों



को एक गहरी धार्मिक और आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करता है।

अमरावती की चित्रकला का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह था कि इसमें बौद्ध जीवन को दृश्यात्मक तरीके से चित्रित किया गया, जिसमें बौद्ध जीवन के प्रतीकात्मक चित्रों और घटनाओं का चित्रण किया गया। इन चित्रों में विशेष रूप से प्राकृतिक दृश्यों, जैसे कि जंगल, नदियाँ, पर्वत, और अन्य प्राकृतिक तत्वों को शामिल किया गया, जो बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के साथ सांस्कृतिक और धार्मिक अर्थों को जोड़ते हैं (गुप्ता और सिंह, 2017)। इस प्रकार, अमरावती शैली की चित्रकला न केवल बौद्ध धर्म की धार्मिक शिक्षाओं को प्रदर्शित करती थी, बल्कि यह मानवता और प्रकृति के बीच के संबंधों को भी उजागर करती थी।

मथुरा और गंधारा शैलियों से विभिन्नताएँ

मथुरा और गंधारा शैलियों की तुलना में अमरावती शैली में अधिक जटिलता और सौंदर्य था। मथुरा और गंधारा शैलियाँ जहाँ अपनी धार्मिक मूर्तियों और चित्रों में शारीरिक रूप और यथार्थवादी दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करती थीं, वहीं अमरावती शैली ने इन सबके अलावा बौद्ध धर्म के गहरे दर्शन और विचारों को चित्रित करने के लिए अधिक कलात्मक और रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया। मथुरा की मूर्तियाँ अधिक स्थिर और यथार्थवादी होती थीं, जबकि अमरावती में मूर्तियों और चित्रों में गतिशीलता और गति का प्रभाव देखा जाता है।

अमरावती में मूर्तिकला का रूप अधिक तरल, लचीला और सजीव होता था। यहाँ की मूर्तियों और चित्रकला में घटनाओं को प्रस्तुत करने का तरीका अधिक नाटकीय था, जिसमें बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का गहरा चित्रण था। मथुरा और गंधारा में जहाँ पश्चिमी प्रभाव अधिक था, अमरावती में भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का प्रभाव अधिक स्पष्ट था।

अमरावती की कला में, गंधारा और मथुरा की तुलना में अधिक जटिलता और सौंदर्य होता था, जो इसे भारतीय बौद्ध कला का एक उच्चतम रूप मानता है। यहाँ की मूर्तियाँ और चित्रकला न केवल धार्मिक सिद्धांतों का प्रकट करती थीं, बल्कि उन्हें एक अत्यधिक समृद्ध और विविध दृष्टिकोण से भी प्रस्तुत करती थीं (भारद्वाज और यादव, 2021)।

इस प्रकार, अमरावती शैली ने बौद्ध कला में एक नया मोड़ दिया और इसे एक उच्च स्तर पर पहुँचाया, जिसमें दृश्यात्मकता, गतिशीलता, और धार्मिक प्रतीकवाद का एक अद्भुत संयोजन था।

5. गंधारा, मथुरा और अमरावती शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

गंधारा, मथुरा और अमरावती शैलियाँ बौद्ध कला की तीन प्रमुख और विशिष्ट शैलियाँ हैं, जो भारतीय उपमहाद्वीप में बौद्ध धर्म के प्रसार और विकास के महत्वपूर्ण प्रमाण हैं। इन शैलियों के बीच प्रमुख अंतर उनकी आइकनोग्राफी, प्रतीकवाद, और कला रूपों में हैं, जो न केवल इनकी कला को विशिष्ट बनाते हैं, बल्कि प्रत्येक शैली के सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभावों को भी स्पष्ट करते हैं। इन शैलियों में प्रत्येक का अपना अलग दृष्टिकोण और रूप है, जो उनकी भिन्न सांस्कृतिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि को दर्शाता है।

■ गंधारा शैली का ग्रीको-रोमन प्रभाव

गंधारा शैली, जो आज के पाकिस्तान और अफगानिस्तान के क्षेत्रों में विकसित हुई, ग्रीको-रोमन प्रभाव से अत्यधिक प्रभावित थी। गंधारा में बौद्ध कला ने ग्रीक और रोमन कला के तत्वों को अपनाया, जैसे कि बुद्ध की मूर्तियों में ग्रीक शैली के शारीरिक अनुपात और चेहरों की यथार्थवादिता। गंधारा की मूर्तियों में भगवान बुद्ध और बौद्ध देवताओं को यथार्थवादी रूप में चित्रित किया गया था, जो ग्रीक कला की प्रभावशाली शारीरिक शैली से प्रेरित थे। इसके अलावा, गंधारा की वास्तुकला में भी रोमन स्तंभ और अन्य पश्चिमी स्थापत्य शैलियाँ देखी जा सकती हैं (देसाई, 2020, भट्टाचार्य, 2021)।

■ मथुरा और अमरावती शैलियाँ: भारतीय रूपों और प्रतीकों का प्रतिबिंब



इसके विपरीत, मथुरा और अमरावती शैलियाँ अधिक भारतीय परंपराओं और प्रतीकों को दर्शाती हैं। मथुरा शैली में मूर्तियाँ और चित्रकला भारतीय धार्मिक आदर्शों और प्रतीकवाद से प्रभावित थीं। यहाँ की मूर्तियाँ अधिक भारतीय शैली में निर्मित थीं, जिसमें भगवान बुद्ध के रूपों को भारतीय संस्कृति के प्रतीकों के अनुसार सजाया गया था। मथुरा की मूर्तियों में बुद्ध की शांति और निर्वाण की अभिव्यक्ति पर जोर था, जो भारतीय धार्मिक विचारधारा से सीधे जुड़ा था। इसी प्रकार, अमरावती शैली ने भारतीय धार्मिक दृष्टिकोण को समृद्ध और विस्तृत रूप से चित्रित किया, जिसमें बौद्ध धर्म की कथाएँ और सिद्धांत गहरे धार्मिक प्रतीकवाद के रूप में दर्शाए गए थे (मिश्रा, 2020)।

■ कला रूपों और प्रतीकों में भिन्नताएँ

इन शैलियों के कला रूपों और प्रतीकों में भी स्पष्ट भिन्नताएँ हैं। गंधारा शैली में ग्रीको-रोमन प्रभाव के कारण मूर्तियों में शारीरिक अनुपात, चेहरे की अभिव्यक्ति और वस्त्रों की सजीवता पर विशेष ध्यान दिया गया। मथुरा और अमरावती में, हालांकि, भारतीय धर्म और संस्कृति के प्रतीकों को अधिक महत्व दिया गया था, जैसे कि बुद्ध के जीवन के प्रमुख क्षणों की चित्रकला, जिसमें निर्वाण, ज्ञान की प्राप्ति, और उपदेश देना शामिल था। इन शैलियों में प्रतीकों का उपयोग बौद्ध धर्म के सिद्धांतों और जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाने के लिए किया गया था (मिश्रा, 2020)।

■ सामाजिक और धार्मिक प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण

गंधारा, मथुरा और अमरावती शैलियाँ न केवल कला रूपों में भिन्न थीं, बल्कि इनका सामाजिक और धार्मिक प्रभाव भी अलग था। गंधारा शैली ने बौद्ध धर्म के प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विशेष रूप से मध्य एशिया और पश्चिमी दुनिया में, जहाँ ग्रीक और रोमन साम्राज्य के प्रभाव से बौद्ध धर्म को एक नई पहचान मिली। इसके विपरीत, मथुरा और अमरावती की शैलियाँ भारतीय उपमहाद्वीप के भीतर बौद्ध धर्म के प्रसार में अधिक प्रभावी थीं, जहाँ भारतीय प्रतीकवाद और संस्कृति को प्रमुखता दी गई (पटेल, 2023)।

मथुरा और अमरावती शैलियों ने बौद्ध धर्म को अधिक भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ में प्रस्तुत किया, जो स्थानीय जनता के लिए अधिक सुलभ था। इन शैलियों के माध्यम से बौद्ध धर्म के संदेशों को भारतीय दर्शकों के बीच अधिक प्रभावी रूप से फैलाया गया। दूसरी ओर, गंधारा शैली ने पश्चिमी कला और धर्म के सिद्धांतों को अपनाकर बौद्ध धर्म को दुनिया के अन्य हिस्सों में फैलाने में मदद की, जिससे इसके वैश्विक प्रसार में सहारा मिला (पटेल, 2023)।

गंधारा, मथुरा और अमरावती शैलियाँ बौद्ध कला के विभिन्न दृष्टिकोणों और प्रभावों का प्रतिनिधित्व करती हैं। गंधारा ने ग्रीको-रोमन कला के प्रभाव को अपनाकर बौद्ध धर्म को पश्चिमी दुनिया में पेश किया, जबकि मथुरा और अमरावती ने भारतीय धार्मिक परंपराओं और प्रतीकवाद का अनुसरण किया। इन शैलियों के बीच की भिन्नताएँ न केवल कला के दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं, बल्कि इनका सामाजिक और धार्मिक प्रभाव भी अलग-अलग था, जो बौद्ध धर्म के प्रसार और रूपों में विविधता को दर्शाता है।

निष्कर्ष

गंधारा, मथुरा और अमरावती शैलियों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि बौद्ध कला की विविधताएँ स्थानीय संस्कृतियों और धार्मिक संदर्भों द्वारा प्रभावित थीं। गंधारा में ग्रीको-रोमन प्रभाव, मथुरा में भारतीय धार्मिक प्रतीकवाद और अमरावती में चित्रात्मक दृष्टिकोण ने बौद्ध धर्म को विभिन्न सांस्कृतिक परिवेशों में आकार दिया। ये शैलियाँ न केवल बौद्ध कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, बल्कि इनके माध्यम से भारतीय समाज और धर्म में हुए विभिन्न परिवर्तनों को भी समझा जा सकता है। इन शैलियों के विश्लेषण से बौद्ध धर्म के प्रसार के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं का स्पष्ट चित्र मिलता है, और इस क्षेत्र में आगे अनुसंधान से बौद्ध कला और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के और भी महत्वपूर्ण पहलुओं को समझने में मदद



मिल सकती है (सैनी, 2020)।

संदर्भ

- भट्टाचार्य, डी. (2021). भारत में बौद्ध कला और आइकनोग्राफी: गांधार, मथुरा और अमरावती स्टाइल का एक तुलनात्मक अध्ययन। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- देसाई, एस. (2020). शुरुआती बौद्ध कला पर सांस्कृतिक प्रभाव: गांधार, मथुरा और अमरावती स्कूल का एक तुलनात्मक विश्लेषण। जर्नल ऑफ इंडियन आर्ट हिस्ट्री, 28(3), 214–229.
- कुमार, आर. (2019). गांधार बौद्ध कला पर ग्रीक प्रभाव की भूमिका। आर्ट एंड आर्किटेक्चर रिव्यू, 14(2), 87–98.
- वर्मा, पी., और जोशी, एस. (2018). मथुरा और गांधार की मूर्तियों में धार्मिक प्रतीक। जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 22(4), 321–335.
- सिंह, ए. (2017). गांधार और मथुरा: शुरुआती बौद्ध कला में तुलनात्मक आइकनोग्राफी। इंडियन आर्कियोलॉजी जर्नल, 12(1), 45–61.
- शर्मा, आर., और मेहता, के. (2021). कला और धर्म: गांधार और अमरावती की मूर्तियों का एक तुलनात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट हिस्ट्री, 25(5), 62–80.
- रानी, एस. (2019). बुद्धिस्ट मॉन्यूमेंट्स और स्कल्पचर्स: ए स्टडी ऑफ अर्ली इंडियन स्टाइल्स. नई दिल्ली: रूटलेज.
- सैनी, वी. (2020). द आइकनोग्राफी ऑफ बुद्धा इन मथुरा एंड गांधार स्टाइल्स. इंडियन जर्नल ऑफ एंशिअंट आर्ट, 8(4), 158–172.
- कपूर, डी. (2022). बुद्धिस्ट आर्ट एंड आर्किटेक्चर: कम्परेटिव पर्सपेक्टिव्स. ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- भारद्वाज, टी., और यादव, एम. (2021). द कल्चरल सिंथेसिस ऑफ बुद्धिस्ट आर्ट: गांधार वर्सेस मथुरा. हेरिटेज एंड आर्ट जर्नल, 13(1), 49–61.
- मिश्रा, पी. (2020). शुरुआती भारत में मूर्तिकला की परंपराएं: मथुरा और गांधार का अध्ययन। आर्कियोलॉजिकल स्टडीज, 14(6), 135–151.
- कुमार, एच. (2018). शुरुआती भारतीय बौद्ध कला में आइकनोग्राफिक बदलाव: गांधार और अमरावती स्कूल। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट एंड कल्चर, 31(7), 259–272.
- पटेल, एस. (2023). गांधार और अमरावती में आर्टिस्टिक डेवलपमेंट: कल्चरल कन्वर्जेस की एक स्टडी। स्टडीज इन एशियन आर्ट एंड आर्किटेक्चर, 19(8), 99–111.
- गुप्ता, एन., और सिंह, वी. (2017). भारत में शुरुआती बौद्ध स्कल्पचरल आर्ट: गांधार, मथुरा और अमरावती स्टाइल की तुलना। जर्नल ऑफ इंडियन आर्ट हिस्ट्री, 30(3), 202–216.
- यादव, एम., और शर्मा, ए. (2020). अमरावती स्टाइल: शुरुआती बौद्ध आर्ट में सिंबॉलिज्म और कल्चरल कॉन्टेक्ट। जर्नल ऑफ इंडियन कल्चरल स्टडीज, 11(2), 57–70.

